M.A. (HINDI) PART-
W.e.f 2020
Exam

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

संशोधित पाठ्यक्रम एम0 ए0 हिन्दी (व्यक्तिगत)

प्रथम वर्ष — वर्ष 2019–2020 से प्रभावी

1	प्रश्न पत्र प्रथम –	हिन्दी साहित्य का इतिहास	G-125
2	प्रश्न पत्र द्वितीय –	प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य	G-126 — ~~M.A. II – 325~~
3	प्रश्न पत्र तृतीय –	नाटक और रंगमंच	G-127 → M.A. ~~II~~ – 331
4	प्रश्न पत्र चतुर्थ –	प्रयोजनमूलक हिन्दी	128 → ~~M.A. II – 330~~
5	प्रश्न पत्र पंचम –	उत्तर मध्यकालीन काव्य	230 129
6	प्रश्न पत्र छष्ठम –	कथा–साहित्य	231 130
7	~~प्रश्न पत्र सप्तम –~~	~~वैकल्पिक प्रश्न पत्र~~	
		~~कथेतर गद्य साहित्य~~	232 131

अथवा

विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)

- क – सूरदास — 225
- ख – गोस्वामी तुलसीदास — 226
- ग – जयशंकर प्रसाद — 227
- घ – प्रेमचंद — 228
- ङ – अज्ञेय — 229

कबीर — 230

द्वितीय वर्ष — वर्ष 2020–2021 से प्रभावी

1	प्रश्न पत्र प्रथम –	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	G-325 326
2	प्रश्न पत्र द्वितीय –	आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यन्त)	G-326 — MA I G-128
3	प्रश्न पत्र तृतीय –	काव्य शास्त्र (भारतीय ~~एवं पाश्चात्य~~)	G-330
4	प्रश्न पत्र चतुर्थ –	पत्रकारिता–प्रशिक्षण	G-329
5	प्रश्न पत्र पंचम –	प्रस्तुतिकरण एवं मौखिकी (पाठ्यक्रम पर आधारित)	G-333
6	प्रश्न पत्र छष्ठन –	छायावादोत्तर काव्य	331 — M.A.I 229
7	प्रश्न पत्र सप्तम –	हिन्दी आलोचना	332
8	प्रश्न पत्र अष्टम –	वैकल्पिक प्रश्न पत्र (कोई एक)	

- विशिष्ट साहित्यधारा (भारतीय साहित्य) — G-327
- विशिष्ट साहित्यधारा (कौरवी लोक साहित्य) — G-328
- विशिष्ट साहित्यधारा (प्रवासी हिंदी साहित्य)
- ~~साहित्यिक निबंध — G-335~~

विशिष्ट साहित्य धारा (प्राचीन भाषा साहित्य) — G-335

प्रथम (पाठ्यक्रम प्रथम)

हिन्दी साहित्य का इतिहास

4876 (N)

G-125

एम0ए0 हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य तथा हिन्दी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचाराधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी अवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन-कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

हिन्दी साहित्य का काल विभाजन एवं नामकरण, हिन्दी साहित्य के इतिहास के लेखन की परम्परा।

इकाई 2

आदिकाल की पृष्ठभूमि, (नाथ, सिद्ध और जैन साहित्य) रासो काव्य एवं फुटकर लौकिक साहित्य (विद्यापति और अमीर खुसरो)

इकाई 3

भक्तिकाल की परिस्थितियाँ, भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और प्रमुख धाराएँ (संत काव्यधारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्ति काव्य और राम भक्ति काव्य)

रीतिकालीन कविता की परिस्थितियां, प्रमुख प्रवृत्तियां, धाराएँ (रीति सिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई 4

आधुनिक साहित्य की परिस्थितियां, विचाराधाराएं, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता।

इकाई 5

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य की प्रमुख विद्याओं का परिचय, निबन्ध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं (संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रावृतान्त)

निबन्धात्मक/आलोचनात्मक प्रश्न	2 X 30 = 60 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 4 = 20 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 4 = 20 अंक
योग	=100 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

4877 (N)
G-126

प्रथम (पाठ्यक्रम द्वितीय)
प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य

हिन्दी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंशा का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहटठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्य ने परवर्ती कालाओं को प्रभारित करने में सक्रिय तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक-जागरण और लोक-मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

(इस पाठयक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समेयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 चंबरदायी-पद्मावती समय, संपादितः हजारी प्रसाद द्विवेदी एवं नामवर सिंह।

इकाई 2 कबीर :- कबीर ग्रन्थावली-संपादक, डॉ0 श्यामसुन्दर दास-50 साखियां (प्रारंभिक)

इकाई 3 मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागमती वियोग खण्ड।
सूरदास- भ्रमरगीत सार - संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
7, 8, 23, 30, 41, 42, 52, 57, 64, 69, 70, 85, 90, 94, 97, 101, 104, 105, 116, 134, 136, 143, 155, 166, 186, 194, 210, 220, 221

इकाई 4 तुलसीदास : राचरित मानस, गीता प्रेस (उत्तराखण्ड के आरंभिक 40 दोहे तथा चौपाइयां)

इकाई 5 द्रुतपाठ :-
विद्यापति, अमीर खुसरा, नानक, गोरखनाथ, मीराबाई, रैदास, कुंभनदास।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके साहित्यिक परिचय से संबंधित प्रश्न होंगे। निबन्धात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों से नहीं पूछे जायेंगे।

व्याख्या	2 X 15	= 30 अंक
निबन्धात्मक प्रश्न	1 X 30	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	5 X 4	= 20 अंक
अतिलघु उत्तरीय प्रश्न	10 X 2	= 20 अंक
योग		= 100 अंक

नोट :- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से दो व्याख्या करनी होंगी।

2. व्यायाख्याएं चंदवरदायी, कबीर, जायसी, सूरदास एवं तुलसीदास के चयनित काव्य में से पूछी जाएगी। निबन्धात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

3. लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहु विकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

4078(N)
G-127

प्रथम (पाठ्यक्रम तृतीय)
नाटक और रंगमंच

नाटक साहित्य की महत्त्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर द्रष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिन्दी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ-साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने-समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

इकाई 1

नाटक तथा रंगमंच का स्वरूप।

नाट्य भेद-भारतीय रूपक-उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

इकाई 2

नाट्य विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन।
रंगमंच के प्रमुख प्रकार, रंगशिल्प, रंग सम्प्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
रंगमंच-लोक नाट्य, संस्थाएं), (पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, और नुक्कड़ नाटक।

नाटकों का अध्ययन

इकाई 3	1.	अंधेर नगरी	-	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
	2.	चन्द्रगुप्त	-	जयशंकर प्रसाद
इकाई 4	3.	लहरों के राजहंस	-	मोहन राकेश
	4.	अंधायुग	-	धर्मवीर भारती

इकाई 5 एकांकी

एक घूंट	- जयशंकर प्रसाद,	चारुमित्रा	- राजकुमार वर्मा
अण्डे के छिलके	- मोहन राकेश	आखिरी आदमी	- धर्मवीर भारती

द्रुतपाठ :-

लक्ष्मी नारायण लाल, रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचन्द्र माथुर, सुरेन्द्र वर्मा, शंकर शेष, हबीब तनवीर।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे। जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से संबंधित सामान्य प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 x 15	= 30 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 30	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 4	= 20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 2	= 20 अंक
योग			=100 अंक

नोट:- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- इकाई 01, 02 एवं 05 से निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे। इकाई 03 एवं 04 से व्याख्या एवं निबंधात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :- नाटक और रंगमंच

4079(N)

G-120

प्रथम (पाठ्यक्रम चतुर्थ)

प्रयोजनमूलक हिन्दी

आज हिन्दी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिन्दी की संरचना साहित्यिक हिन्दी तथा सृजनात्मक हिन्दी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिन्दी का स्वरूप अलग है। हिन्दी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिन्दी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

इकाई 1 कामकाजी हिन्दी : हिन्दी के विभिन्न रूप-सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राज भाषा, माध्यम भाषा, मातृ भाषा, कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, टिप्पण, संक्षेपण, पल्लवन।

इकाई 2 जनसंचार माध्यमों के लिए हिन्दी लेखन, रिपोर्ट-लेखन, संपादकीय, अग्रलेख, लघु टिप्पणियाँ।

इकाई 3 फीचर लेखन, विविध दैनिकों, रेडियो चैनलों, इंटरनेट, मोबाइल, फिल्मों, टीवी चैनलों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप, जनसंपर्क एवं विज्ञापनों में हिन्दी।

इकाई 4 हिन्दी कम्प्यूटिंग

कम्प्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र, वेब-पब्लिशिंग का परिचय।

इण्टरनेट सम्पर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इण्टरनेट समय मितव्ययता के सूत्र, वेब-पब्लिशिंग, इण्टरनेट एक्सप्लोरर अथवा नेटस्केप, लिंक, ब्राउजिंग, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना

इकाई 5 अनुवाद

अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद।

अनुवाद का अन्य क्षेत्र : वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, विधि, साहित्य, कार्यालयी।

निबंधात्मक प्रश्न 2 x 30	= 60 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न 5 x 7	= 20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न 10 x 2	= 20 अंक
योग	= 100 अंक

नोट :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

संदर्भ ग्रन्थ :- प्रयोजनमूलक हिन्दी

1	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- विनोद गोदरे
2	प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और प्रयोग	- दंगल झाल्टे
3	टिप्पणी प्रारूप	- शिवनारायण चतुर्वेदी
4	प्रालेखन प्रारूप	- शिवनारायण चतुर्वेदी
5	राजभाषा विविधा	- माणिक मृगेश
6	व्यावसायिक हिन्दी	- रहमतुल्लाह
7	पत्र-व्यवहार निर्देशिका	- भोलानाथ तिवारी, विजय कुलश्रेष्ठ
8	प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ पठन	- भोलानाथ तिवारी
9	व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप	- कृष्ण कुमार गोस्वामी
10	प्रयोजनमूलक हिन्दी	- (संपा0) कृष्ण कुमार गोस्वामी

4080(N)

G.-129

उत्तर मध्यकालीन काव्य

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे ही रति और रीति भी। जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तद्युगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के शृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी। रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1 बिहारी — 40 प्रारम्भिक दोहे (बिहारी बोधिनी, संपा0 लाला भगवानदीन)

इकाई 2 घनानंद — 25 प्रारम्भिक कवित्त (घनानंद कवित्त, संपा0 विश्वनाथ प्रताप मिश्र)

इकाई 3 केशवदास — 25 प्रारम्भिक कवित्त (रामचन्द्रिका से)

इकाई 4 भूषण — 15 प्रारम्भिक दोहे (भूषण ग्रंथावली संपा0 डॉ0 भगीरथ दीक्षित)

इकाई 5 द्रुतपाठ

देव, रसखान, सेनापति, पद्माकर, मतिराम, गिरधर कविराय, गुरू गोविंद सिंह।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 x 15	= 30 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 30	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 4	= 20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 2	= 20 अंक
योग			= 100 अंक

नोट 1:- 1. प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

2 :- व्याख्याएँ बिहारी, घनानंद, केशवदास एवं भूषण के चयनित काव्य में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त कवियों पर आधारित होंगे।

3 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

4081(N)
G-130

कथा-साहित्य

हिन्दी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

उपन्यास एवं कहानी का स्वरूप, इतिहास, प्रमुख शैलियाँ, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों एवं कहानीकारों का वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य।

इकाई 2

1. गोदान - प्रेमचंद
2. मैला आंचल - फणीश्वर नाथ 'रेणु'

इकाई 3

1. बाणभट्ट की आत्मकथा - हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'

इकाई 4

हिन्दी कहानी

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (उसने कहा था), जयशंकर प्रसाद (पुरस्कार), प्रेमचन्द (कफन), निर्मल वर्मा (परिन्दे), गिरिराज किशोर (अन्तर्दाह), से0 रा0 यात्री (टापू पर अकेले)।

इकाई 5 द्रुतपाठ

अमृतलाल नागर, श्रीलाल शुक्ल, शैलेश मटियानी, कृष्णा सोबती, मृणाल पाण्डेय, चित्रा मुद्गल, मन्नू भण्डारी।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके जीवन परिचय तथा रचना से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्याएँ	-	2 x 15	=	30 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 30	=	30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 4	=	20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 2	=	20 अंक
योग	--		=	अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।

02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 02, 03 से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न इकाई संख्या 01, 02, 03 एवं 04 से पूछे जाएंगे।

03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

4002(N)

G-13

कथेतर गद्य साहित्य

हिन्दी साहित्य की विधाओं में कथा साहित्य एवं नाट्य के अतिरिक्त सृजनधर्मी रचनाकारों द्वारा लिखित अन्य विधाओं का अध्ययन भी अपेक्षित है। यह प्रश्नपत्र इसी कमी को पूरा करता है जिसमें साहित्य की कई नवीन विधाओं का अध्ययन होगा।

(इस पाठ्यक्रम में रचनाओं के साथ-साथ, इस समयावधि के रचनाकर्म, उसकी विशिष्टताओं पर व्यापक चर्चा एवं समीक्षा की जानी अपेक्षित है।)

इकाई 1

निबंध : श्रद्धा-भक्ति - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
देवदारू - हजारी प्रसाद द्विवेदी
मेरे राम का मुकुट भीग रहा है - विद्यानिवास मिश्र
निशाद बांसुरी - कुबेरनाथ राय

इकाई 2

व्यंग्य : हरिशंकर परसाई - इंस्पेक्टर मातादीन चांद पर
शरद जोशी - होना कुछ नहीं का
श्रीलाल शुक्ल - कुत्ते और कुत्ते
रवीन्द्र नाथ त्यागी - एक दीक्षांत भा-ण

इकाई 3

रेखाचित्र : दस तस्वीरें - जगदीश चन्द्र माथुर

इकाई 4

घुमक्कड़ शास्त्र - राहुल सांकृत्यायन

इकाई 5 द्रुतपाठ :

महावीर प्रसाद द्विवेदी, कन्हैया लाल मिश्र 'प्रभाकर', पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र', डॉ0 नगेन्द्र, ज्ञान चतुर्वेदी, ओम प्रकाश वाल्मीकि।

द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से लघु उत्तरीय/अति लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे, जो उनके साहित्यिक परिचय से सम्बन्धित प्रश्न होंगे। निबंधात्मक प्रश्न द्रुतपाठ के लिए चयनित रचनाकारों में से नहीं पूछे जाएंगे।

व्याख्या	-	2 x 15	= 30 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	-	1 x 30	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	-	5 x 4	= 20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	-	10 x 2	= 20 अंक
योग			= 100 अंक

नोट 01:- प्रथम प्रश्न व्याख्या का होगा जो अनिवार्य होगा। चार व्याख्याओं में से 2 अनिवार्य करनी होगी।
02 :- व्याख्याएँ इकाई संख्या 01 से 02 तक में से ही पूछी जाएंगी। निबंधात्मक प्रश्न उक्त रचनाकारों पर आधारित होंगे।
03 :- लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

विशिष्ट रचनाकार (कोई एक)

हिन्दी के उन कालजयी रचनाकारों का अध्ययन करना आवश्यक है, जिन्होंने चिंतन और सर्जन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और जिनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। अतः इन रचनाकारों की साहित्यिक दृष्टि को समझना आवश्यक है।

कबीरदास 4083 (N) G-230

पाठ्यग्रंथ : (क) कबीर ग्रन्थावली - सं0 डॉ0 श्यामसुन्दर दास

सहायक ग्रंथ :

1. कबीर - हजारी प्रसाद द्विवेदी।
2. कबीर दर्शन - रामजीलाल सहायक।
3. कबीर : एक नई दृष्टि - डॉ0 रघुवंश।
4. कबीर का रहस्यवाद - आचार्य परशुराम चतुर्वेदी।
5. हिन्दी संत काव्यों में परम्परा और प्रयोग - डॉ0 भगवान देव पाण्डेय।
6. कबीर एक अनुशीलन - डॉ0 रामकुमार वर्मा।
7. कबिरा खड़ा बाजार में - भीष्म साहनी।
8. कबीर का रहस्यवाद - रामकुमार वर्मा।
9. कबीर - सं0 विजयेन्द्र स्नातक।

सूरदास 4084(N) (G-225) E

पाठ्यग्रंथ : सूरसागर - सार (संपूर्ण) - सं0 डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, नवीन संस्करण।

सहायक ग्रंथ :-

1. सूरदास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2. सूर-साहित्य - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3. अ-टछाप और वल्लभ संप्रदाय - डॉ0 दीनदयाल गुप्ता।
4. सूर और उनका साहित्य - डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा।
5. हिन्दी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका - डॉ0 रामनरेश वर्मा।
6. सूरदास और कृष्ण भक्ति काव्य - डॉ0 मैनेजर पाण्डेय।
7. सूरदास - नंददुलारे वाजपेयी।
8. हिन्दी कृष्णभक्ति साहित्य - मधुर भाव की उपासना - प्रो0 पूर्णमासी राय।
9. मीरा का काव्य - डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
10. मीराबाई - डॉ0 श्रीकृष्ण लाल।
11. भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य - मैनेजर पाण्डेय।

गोस्वामी तुलसीदास 4085(N) G-226.

पाठ्यग्रंथ :

1. रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड - संपूर्ण) 326 दोहा)
2. कवितावली - (केवल उत्तरकाण्ड, कुल 183 छंद)
3. विनय पत्रिका - चुने हुए कुल 51 पद (पद संख्या :- 1, 3, 4, 5, 17, 30, 36, 41, 45, 72, 73, 76, 78, 79, 85, 88, 89, 90, 94, 97, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 111, 113, 114, 115, 121, 155, 156, 158, 159, 160, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 169, 172, 174, 185, 198, 201, 272)

सहायक ग्रंथ :–

1 गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
2 तुलसीदास – डॉ0 माताप्रसाद गुप्त।
3 मानस दर्शन – डॉ0 श्रीकृष्णलाल।
4 तुलसी और उनका युग – डॉ0 राजपति दीक्षित।
5 तुलसी की जीवन भूमि – चन्द्रवलि पाण्डेय।
6 रामकथा का विकास – कामिल बुल्के हिन्दी परिषद्, प्रयाग
7 मानस की रूसी भूमिका (हिन्दी अनुवाद) – वारान्निकोव, विद्यामंदिर, लखनऊ
8 सन्त तुलसीदास और उनका संदेश – डॉ0 राजपति दीक्षित।
9 गोस्वामी तुलसीदास की दृष्टि में नारी और उसका महत्व – डॉ0 ज्ञानवती त्रिवेदी।
10 लोकवादी तुलसी – डॉ0 विश्वनाथ त्रिपाठी।
11 तुलसीदास – ग्रियर्सन।
12 तुलसी – उदयभानु सिंह
13 तुलसी सन्दर्भ – डॉ0 नगेन्द्र

जयशंकर प्रसाद 4886(N) G-227 (New)

पाठ्य ग्रंथ :

1 कामायनी (सम्पूर्ण)
2 ध्रुवस्वामिनी
3 कहानी : आकाशदीप, गुंडा, देवरथ।
4 काव्य कला तथा छायावाद और यथार्थ (प्रथम निबन्ध और अन्तिम निबन्ध)

सहायक ग्रंथ :–

1 जयशंकर प्रसाद – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
2 नया साहित्य : नये प्रश्न – आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।
3 जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला – डॉ0 रामेश्वर खण्डेलवाल।
4 प्रसाद और उनका साहित्य – विनोद शंकर व्यास।
5 प्रसाद का काव्य – डॉ0 प्रेमशंकर।
6 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
7 प्रसाद के जीवन और साहित्य – डॉ0 रामरतन भटनागर।
8 हिन्दी नाटक – डॉ0 बच्चन सिंह।
9 प्रसाद का गद्य साहित्य – डॉ0 राजमणि शर्मा।
10 प्रसाद : दुखान्त नाटक – रामकृष्ण शुक्ल श्रीमुख।
11 नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान – डॉ0 वशिष्ठनागर त्रिपाठी।
12 प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन – डॉ0 धर्मपाल कपूर
13 कामायनी का पुनर्मूल्याकन – रामस्वरूप चतुर्वेदी
14 प्रसाद साहित्य सर्जना के आयाम – माधरी सुबोध (संपादक)
15 प्रसाद सन्दर्भ – प्रमिला शर्मा (संपादक)

प्रेमचंद 4887(N) G-228 (New)

(क) रंगभूमि (ख) प्रेमाश्रम
(ग) गबन (घ) मानसरोवर (खण्ड एक)

सहायक ग्रंथ

1 प्रेमचंद – घर में – शिवरानी देवी।

2 प्रेमचंद : एक विवेचन – इन्द्रनाथ मदान।
3 प्रेमचंद और उनका युग – रामविलास शर्मा।
4 प्रेमचंद : कलम का सिपाही –अमृतराय।
5 प्रेमचंद – मदनगोपाल
6 प्रेमचंद : जीवन, कला एवं कृतित्व – हंसराज रहबर।
7 प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन – नंददुलारे वाजपेयी।
8 कथाकार प्रेमचंद – मन्मथनाथ गुप्त।
9 प्रेमचंद : एक अध्ययन – राजेश्वर गुरु।
10 प्रेमचंद की उपन्यास कला – जनार्दन प्रसाद राय।
11 प्रेमचंद एवं भारतीय किसान – रामवक्ष।
12 प्रेमचंद : गंगा प्रसाद विमल।
13 प्रेमचंद के साहित्य सिद्धान्त – नरेन्द्र कोहली।
14 प्रेमचंद : एक कला व्यक्तित्व – जैनेन्द्र।
15 प्रेमचंद स्मृति – सं0 अमृतराय।
16 प्रेमचंद : चिंतन और कला – सं0 इन्द्रनाथ मदान।
17 प्रेमचंद और गोर्की – श्री मधु।
18 हिन्दी उपन्यास : विशेषतः प्रेमचंद : नलिन विलोचन शर्मा।

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' 408(AN) G-229(New)

पाठ्य ग्रंथ : 1 शेखर एक जीवनी (भाग 1, 2), 2 आंगन के पार द्वार, 3 अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ।

सहायक ग्रंथ :–

1 अज्ञेय का कथा साहित्य – ओम प्रभाकर।
2 अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि – सत्यपाल चुघ।
3 अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्या – रामस्वरूप चतुर्वेदी।
4 शिखर से सागर तक – डॉ0 रामकमल राय।
5 अज्ञेय और नयी कविता – डॉ0 चन्द्रकला त्रिपाठी।
6 अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम – डॉ0 नवीन चन्द्र लोहनी।
7 अज्ञेय कवि और काव्य – डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद
8 अज्ञेय का कवि कर्म – कृष्णदत्त पालीवाल
9 अज्ञेय का काव्य भाव और शिल्प – डॉ0 शंकर बसंत मुद्गल
10 आज के लोकप्रिय कवि अज्ञेय – विद्यानिवास मिश्र
11 अज्ञेय एक अध्ययन – भोला भाई पटेल
12 अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम – डॉ0 पुष्पा शर्मा

व्याख्या	–	2 X 15	= 30 अंक
निबंधात्मक प्रश्न	–	1 X 30	= 30 अंक
लघु उत्तरीय प्रश्न	–	5 X 4	= 20 अंक
अति लघु उत्तरीय प्रश्न	–	10 X 2	= 20 अंक
योग			= 100 अंक

नोट 01 :– विशेष चयन के रूप में एक साहित्यकार का साहित्य पढ़ा जाएगा।
02 :– लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 200 शब्दों में तथा अति लघु उत्तरीय प्रश्नों का उत्तर अधिकतम 100 शब्दों में लिखना होगा। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों में बहुविकल्पीय तथा सत्य–असत्य पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जाएंगे।

सन्दर्भ सूची :– विशिष्ट रचनाकार

1	भक्ति आन्दोलन और सूरदास का काव्य	– मैनेजर पाण्डे
2	महाकवि सूरदास	– आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी
3	प्रसाद सन्दर्भ	– सम्पादक : प्रमिला शर्मा
4	प्रसाद साहित्य : सर्जना के आयाम	– सम्पादक : माधुरी सुबोध
5	गोस्वामी तुलसीदास	– सम्पादक : रामचन्द्र शुक्ल
6	तुलसीदास	– डॉ0 माताप्रसाद गुप्त
7	तुलसी और उनका युग	– डॉ0 राजपति दीक्षित
8	तुलसी सन्दर्भ	– डॉ0 नगेन्द्र
9	तुलसी	– उदय भानु सिंह
10	जयशंकर प्रसाद	– नन्द दुलारे वाजपेयी
11	कामायनी का पुर्नमूल्यांकन	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
12	अज्ञेय कवि और काव्य	– राजेन्द्र प्रसाद
13	अज्ञेय की काव्य चेतना के आयाम	– प्रो0 नवीन चन्द्र लोहनी
14	अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्प विधि	– डॉ0 सत्यपाल
15	अज्ञेय का काव्य – भाव एवं शिल्प	– डॉ0 शंकर बसंत मुद्‌गल
16	आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि : अज्ञेय	– विद्यानिवास मिश्र
17	अज्ञेय : एक अध्ययन	– भोला भाई पटेल
18	अज्ञेय गद्य रचना के विविध आयाम	– डॉ0 पुष्पा शर्मा
19	कामायनी रूपक	– डॉ0 विनय
20	कबीर	– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
21	नदी के द्वीप में वैयक्तिक स्वच्छंदतावाद	– आशा अरोरा
22	हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास	– रामस्वरूप चतुर्वेदी
23	प्रसाद साहित्य में अतीत चिन्तन	– डॉ0 धर्मपाल कपूर